NEERAJ®

Serving Education for Last 40 Years

हिंदी निबंध और अन्य गद्य विधाएँ

B.H.D.C.-112

B.A. Hindi (Hons.) - 5th Semester

Chapter Wise Reference Book Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Dr. Rajessh Kumar*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 300/-

Content

हिंदी निबंध और अन्य गद्य विधाएँ

Question Paper—June-2023 (Solved) 1
Question Paper—December-2022 (Solved) 1
Sample Question Paper—1 (Solved) 1
Sample Question Paper—2 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

हिन्दी निबंध

1. निबंध : उद्‌भव एवं विकास 1
2. मजदूरी और प्रेम (अध्यापक पूर्ण सिंह) 18
3. करुणा : आचार्य रामचंद्र शुक्ल 35

हिन्दी ललित निबंध

4. ललित निबंध : उद्‌भव विकास और स्वरूप 50
5. देवदारु (आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी) 67
6. मेरे राम का मुकुट भीग रहा है (विद्यानिवास मिश्र) 79
7. आम रास्ता नहीं है (विवेकी राय) 92

गद्य साहित्य और अन्य विधाएँ

8. महाकवि जयशंकर प्रसाद–शिवपूजन सहाय (संस्मरण) 101

9. रेखाचित्र : रजिया 116

10. तुम्हारी स्मृति–माखनलाल चतुर्वेदी (संस्मरण) 127

11. ये हैं प्रोफेसर शशांक–विष्णुकांत शास्त्री (आत्मकथात्मक निबंध) 139

12. गिल्लू–महादेवी वर्मा (रेखाचित्र) 152

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

हिंदी निबंध और अन्य गद्य विधाएँ

B.H.D.C.-112

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

प्रश्न 1. निबंध के उद्‌भव एवं विकास पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-9, प्रश्न 4

प्रश्न 2. 'मजदूरी और प्रेम' निबंध की संरचना शिल्प को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-26, 'संरचना शिल्प'

प्रश्न 3. 'करुणा' निबंध के शीर्षक पर प्रकाश डालते हुए निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-35, 'परिचय', पृष्ठ-42, 'मूल्यांकन'

प्रश्न 4. 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबंध में यह बार-बार कहा गया है कि ''राम भले ही भीग जाएँ उनका मुकुट न भीगने पाए।'' इससे क्या तात्पर्य है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-87, प्रश्न 1 तथा पृष्ठ-85, प्रश्न 1

प्रश्न 5. 'आम रास्ता नहीं है' निबंध की अंतर्वस्तु पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-95, 'अंतर्वस्तु'

प्रश्न 6. प्रसाद जी किस प्रकार स्वजातीय गुणों से युक्त थे? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-101, 'परिचय', पृष्ठ-108, प्रश्न 12

प्रश्न 7. रजिया के व्यक्तित्व की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-118, प्रश्न 3

प्रश्न 8. स्थान के प्रति श्री शशांक की दृष्टि दार्शनिकों की सी क्यों है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-145, प्रश्न 6

प्रश्न 9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) गिल्लू का चरित्र-चरण

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-155, 'गिल्लू का चरित्र-चित्रण'

(ख) करुणा और क्रोध में अंतर

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-47, प्रश्न 19

(ग) 'देवरारु' निबंध का प्रतिपाद्य

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-74, 'निबंध का प्रतिपाद्य'

(घ) ललित निबंध की विशेषताएँ

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-57, प्रश्न 3

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

December – 2022

(Solved)

हिंदी निबंध और अन्य गद्य विधाएँ

B.H.D.C.-112

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

प्रश्न 1. निबंध से क्या तात्पर्य है? निबंध के भेद बताते हुए उनका विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-6, प्रश्न 1 तथा पृष्ठ-7, प्रश्न 2

प्रश्न 2. 'मजदूरी और प्रेम' निबंध की अंतर्वस्तु पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-25, 'अंतर्वस्तु'

प्रश्न 3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल के 'करुणा' निबंध का सार लिखते हुए निबंध के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-43, प्रश्न 13, पृष्ठ-42, 'निबंध का प्रतिपाद्य'

प्रश्न 4. ललित निबंध की परिभाषा देते हुए उसकी भाषाशैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-50, 'ललित निबंध की परिभाषा' तथा पृष्ठ-54, 'ललित निबंध की भाषा शैली'

प्रश्न 5. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध 'देवरारु' की लेखकय अभिव्यक्ति पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-67, 'परिचय', पृष्ठ-73, 'लेखकीय अभिव्यक्ति'

प्रश्न 6. 'मेरे राम का मुकुट भी रहा है' के आधार पर विद्यानिवास मिश्र के व्यक्तित्व का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-79, 'परिचय' तथा पृष्ठ-87, प्रश्न 2

प्रश्न 7. 'महाकवि जयशंकर प्रसाद' पाठ के आधार पर साहित्य में संस्मरण के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-101, 'परिचय', पृष्ठ-108, प्रश्न 8

प्रश्न 8. 'संस्मरण' की अवधारणा पर प्रकाश डालते हुए 'तुम्हारी स्मृति' संस्मरण की विशिष्टता लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-135, प्रश्न 1

प्रश्न 9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) संस्मरण और रिपोर्ताज

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-128, 'संस्मरण और रिपोर्ताज'

(ख) फाल्गुनी महाशिवरात्रि महोत्सव

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-107, प्रश्न 6

(ग) रजिया का चरित्र

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-118, प्रश्न 1 तथा पृष्ठ-119, प्रश्न 4

(घ) संस्मरण और आत्मकथा

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-128, 'संस्मरण और आत्मकथा'

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

हिंदी निबंध और अन्य गद्य विधाएँ

निबंध : उद्‌भव एवं विकास

1

परिचय

आधुनिक हिंदी गद्य विधाओं में निबंध का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। इसका उद्‌भव आज से लगभग डेढ़-दो सौ वर्ष पहले हुआ था। निबंध के स्वरूप के संदर्भ में कई प्रकार के बदलाव व्यापक स्तर पर हुए हैं। निबंध विधा के अंतर्गत पत्रकारिता से लेकर समीक्षात्मक साहित्य एवं सृजनात्मक साहित्य ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवायी है। वर्तमान समय में निबंध, साहित्य की केंद्रीय विद्या मानी जाती है, जिसके अंतर्गत संपादकीय, फीचर लेखन, रिपोर्ताज और टिप्पणी आदि के रूप में निबंध जनसंचार माध्यमों के अंतर्गत अपना प्रभावकारी स्थान बनाए हुए है। हिंदी उपन्यास तथा कहानी के समान निबंध भी पश्चिम की देन मानी जाती है। हिंदी में निबंध का विकास प्राय: अंग्रेजी के निबंधों के आधार पर हुआ है। यह विधा सामान्य परीक्षाओं से लेकर कुछ महत्त्वपूर्ण प्रतियोगी परीक्षाओं में भी प्रमुख विषयों के रूप में एक मुख्य स्थान ग्रहण किए हुए है। साहित्य के अंतर्गत समीक्षात्मक निबंध, ललित निबंध, जीवनी, संस्मरण और यात्रावृत्तांत आदि के रूप में इस विधा ने अपना अस्तित्व बनाया हुआ है।

अध्याय का विहंगावलोकन

निबंध रचना की पृष्ठभूमि

निबंध एक गद्य रचना को कहते हैं, जिसमें हम किसी भी विषय का वर्णन करते हैं। निबंध दो शब्दों से मिलकर बना है 'नि' और 'बंध' जिसका अर्थ हुआ, 'अच्छी तरह से बँधे हुए शब्दों का वर्णन करना'। निबंध लेखन रचनाकार के लिए इतना आसान नहीं होता है। यह एक प्रकार की संस्कृत विधा मानी जाती है, एक प्रकार से कोलॉज रचना व्यवस्था कही जाती है। निबंध की रचना करने वाले कृतिकार भले ही बहुविध दृष्टि से पारंगत न हों, लेकिन उसे अनेक विधाओं के स्वरूप और रचना पद्धति की जानकारी होना जरूरी होती है। निबंध के अंतर्गत कहानी, नाटक, काव्य एवं काव्य की रचनात्मक चेष्टाएँ सम्मिलित होती हैं। निबंध अपनी रचना प्रणाली के तहत कई रूपों में जाँचा-परखा जाता है, जैसे–पत्र भी एक प्रकार से निबंध का ही रूप माना जाता है और इसी तरह डायरी भी निबंध की एक शैली मानी जाती है। इसी प्रकार रेखाचित्र एवं संस्मरण आदि भी निबंध विधा में आते हैं, आत्म-समीक्षात्मक निबंध और ललित निबंध भी इसी के अंतर्गत आते हैं। जितना विषय वैविध्य निबंध में पाया जाता है, उतना किसी अन्य विधा में नहीं मिलता है। अत: कहा जा सकता है कि निबंध का लीला लोक अत्यंत विस्तृत होता है। निबंध के अंतर्गत कल्पना एवं यथार्थ और विचार निबंध में कुछ इस प्रकार से समाहित हो जाते हैं कि उनकी धूप-छाँव या उजाले का प्रतिवेदन असंभव-सा हो जाता है। कथा, नाटक, कविता के तत्वों का सामाजिक स्वरूप, इस रचना विधा में एक प्रकार से कोलॉज जैसा दिखाई देता है। निबंध के अंतर्गत निबंधकार के व्यक्तित्व, सृजन ऊर्जा की भट्ठी में गलकर अपने से विमुक्त नहीं हो पाता है। निबंध के माध्यम से लेखक किसी भी विषय के बारे में अपने विचारों और भावों को बड़े प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने की कोशिश करता है। निबंध लिखना और पढ़ना एक महत्त्वपूर्ण विधा है।

एक श्रेष्ठ निबंधकार को विषय की उपयुक्त जानकारी होना अत्यंत आवश्यक है। दूसरी विधाओं में रचनाकार का उपदेश या तो एकदम शुष्क होता है या दृष्टि ललित तरल होकर सलील धारा की तरह तीक्ष्ण रहती है। अत: कहा जा सकता है कि एक निबंधकार अपने विचार को पिघलाकर खुद के अनुभव में बदल देता है। एक कुशल निबंधकार इतिहासविद्, कथाकार, कवि और संस्कृति व्याख्याता होता है। निबंध रचना के अंतर्गत व्यक्ति के भावों एवं विचारों का क्रिस्टलाइजेशन बहुत उच्च दृष्टिकोण पर होता है। निबंध समकालीन साहित्य के अंतर्गत इन्हीं रचनात्मक शक्तियों के कारण विस्तृत संभावनाओं के द्वार खोलता है। निबंधकारों ने अपनी रचनाओं में भारतीयता की सही पहचान एवं विदेशी प्रभावों की समुचित व्याख्या की है। निबंध विधा कुछ इस प्रकार का कार्य करती है, जिस प्रकार अंगारे को उकसाने का और आग अगर कम हो रही हो तो उसे और तीव्र करने का। खत्म होती जा रही आत्मीयता को पुन: प्रतिष्ठित करने के लिए और अलगावपूर्ण जीवन के लिए बहुत ही आवश्यक होता है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

निबंध का स्वरूप

निबंध उस गद्य रचना को कहते हैं, जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन अथवा प्रतिपादन एक विशिष्ट निजीपन, स्वच्छंदता, सौष्ठव और सजीवता तथा आवश्यक संगति एवं संबद्धता के साथ किया गया हो। निबंध मूलत: संस्कृत भाषा का शब्द है तथा निबंध में 'बंध' धातु में उपसर्ग लगाया जाता है, जिसका अर्थ होता है अच्छी प्रकार से बाँध देना अर्थात् पूर्ण रूप से व्यवस्थित कर देना। प्राचीन काल में ताड़ के पत्तों पर रचित किताबों को चित्रित करने की प्रक्रिया को निबंध कहते थे, जिसका अर्थ होता था बिखरे हुए पन्नों को एक सूत्र में करना। इसी प्रकार निबंध के अंतर्गत व्यक्ति के भावों एवं विचारों को एक सूत्र में पिरोया जाता है तथा उन्हें व्यवस्थित किया जाता है। हिंदी साहित्य में निबंध का स्वरूप साधारण रूप से अंग्रेजी निबंध एवं संस्कृत कृतियों के माध्यम से हुआ है, लेकिन इस विधा ने अपने डेढ़ सौ वर्ष की यात्रा में अपनी एक अलग स्वतंत्र पहचान को स्थापित किया है। निबंध के अंतर्गत व्यक्ति जीवन, मानव चरित्र एवं मानव के चतुर्दिक परिवेश में घटित होने वाले घटनाक्रमों को व्यवस्थित करके निबंधकार ने इस निबंध विधा को कथा, काव्य एवं नाटक की रचनात्मक शक्तियों में सम्मिलित करने का प्रयास किया है।

निबंध की पहचान करने के लिए कई प्रकार की परिभाषा में निबंध रचना को बाँधने का प्रयास किया गया है। समस्त परिभाषा में कहीं-न-कहीं कमी पाई जाती है। डॉ. मोन्तेन के अनुसार, निबंध विचारों एवं भावों की अभिव्यक्ति उदाहरणों अथवा अंतर कथाओं पर निजी प्रतिक्रियाओं के अनुसार है। इसी तरह जॉनसन ने निबंध को भटकन, उन्मुक्त, अनात्मसात् एवं अनियमित भावों एवं विचारों की समानता की अभिव्यक्ति के रूप में स्वीकृत किया है। निबंध को हिंदी के विद्वानों ने परिभाषित करने का सफल प्रयास किया है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल का मत है कि निबंध एक प्रकार का गंभीर विचार प्रकाशन का माध्यम होता है और इसके अंतर्गत विचारों की संबद्धता भाव प्रकाशन की व्यवस्था एवं कसावट को निबंध का तत्व माना जाता है। इसी प्रकार आचार्य नंददुलारे वाजपेयी के शब्दों में, असमपूर्णता विचार न करने वाला गद्य रचना काव्य का वह प्रकार होता है, जिसमें अनुभूति की प्रधानता पाई जाती है। विषय का निरूपण करने में स्वतंत्रता होनी चाहिए, ताकि रचनाकार के व्यक्तित्व का पूर्ण प्रतिबिंब और उसकी शैली मौलिक एवं साहित्य कोटि ही निबंध कहलाते हैं। वहीं, बाबू गुलाब राय ने निबंध के विविध तत्वों की ओर संकेत किया है। उनका मानना है कि निबंध उस गद्य रचना को कहा जाता है, जिसमें सीमित आकार के अंदर एक विषय को वर्णित किया जाता है अथवा प्रतिपादन एक विशेष निजीपन सौष्ठव और सजीवता, स्वच्छंदता एवं जरूरी संगति तथा संबद्धता के साथ होता है। उपर्युक्त परिभाषा के आधार पर निम्नलिखित निबंध प्रकृतियाँ उभरकर सामने आती हैं–

- व्यक्ति की छटपटाहट का प्रतिपादन निबंध होता है। निबंध के अंतर्गत निर्भयता कदापि संभव नहीं होती है।
- निबंध के अंतर्गत हृदय एवं बुद्धि दोनों की अन्विति जरूरी होती है। रामचंद्र शुक्ल ने अपने निबंधों के विषय के अंतर्गत चर्चा करते हुए कहा है कि 'यात्रा के लिए निकलती रही है–बुद्धि', परंतु हृदय को साथ लेकर।
- निबंधों की प्रवृत्ति परंपरा के अनुरूप समीक्षात्मक एवं व्यंग्यात्मक पाई जाती है।

निबंध भाषा की दृष्टि से दूसरी विधाओं की अपेक्षा एक विशिष्टता रखता है। विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि निबंध विचार एवं भाव का समन्वय होता है। वहीं, निबंध के अंतर्गत तार्किकता की अपेक्षा हार्दिकता को व्यापक विस्तार दिया जाता है।

निबंधों का वर्गीकरण

निबंधकारों ने निबंध का वर्गीकरण करते हुए यह माना है कि निबंधों में कुछ निबंध वस्तुपरक होते हैं और कुछ आत्मपरक।

वस्तुपरक

वस्तुपरक निबंध वर्णनात्मक एवं विवरणात्मक होते हैं और इसी तरह विचारात्मक, भावात्मक, निजात्मक निबंध आत्मपरक होते हैं। वस्तुपरक निबंध के अंतर्गत निर्वैयक्तिकता पाई जाती है, परंतु निजात्मक निबंधों के अंतर्गत वैयक्तिकता समाहित होती है। वर्णनात्मक निबंध के अंतर्गत वस्तु, स्थान, दृश्य आदि का चित्रात्मक वर्णन किया जाता है। वस्तु की वास्तविकता को निबंधकार वर्णित करने के लिए कल्पना का भी उपयोग करता है। निबंधकार में देशकाल को प्रदर्शित करने के लिए सच्ची चेतना से ओत-प्रोत भाव होना चाहिए। युद्ध, यात्रा एवं शिकार आदि की घटनाओं को उनके सही क्रम के साथ-साथ सामाजिकता एवं कल्पना की प्रभाव विषमता का भी इस प्रकार के निबंधों में समावेश होता है।

आत्मपरक

आत्मपरक निबंधों में रचनाकार के निजी विचारों का प्रकाशन ज्यादा होता है। रचनात्मकता की आत्मकथा अथवा निजी भावनाओं, विचारों एवं प्रतिक्रियाओं, दृष्टिकोण और जीवन मूल्य आदि का समावेश इस प्रकार के निबंधों में पाया जाता है। इस प्रकार के निबंधों में वर्णित तथ्यपरक एवं प्रमाणिक आधार पर होते हैं। विचारात्मक निबंध के अंतर्गत चरमोत्कर्ष की चर्चा करते हुए आचार्य रामचंद्र शुक्ल का मत है कि शुद्ध विचारात्मक निबंधों के चरमोत्कर्ष वही कहे जा सकते हैं, जहां पर एक-एक पैराग्राफ में भाव एवं विचार ठूँस-ठूँसकर भरे गए हों तथा एक-एक वाक्य किसी सुबोध भाव एवं विचार खंड को प्रस्तुत करता हो। भावनात्मक निबंध के अंतर्गत हृदय तत्व की प्रधानता पाई जाती है। रचनाकार कृति के विषय को हृदय की आँखों से देखता है। रचनाकार के निज से अभिप्राय है, उसके जीवन के मार्मिक अनुभवों से संपन्न रचनाकार के व्यक्तित्व का अपनी विशेषताओं और दुर्बलताओं के साथ वर्णित होना। आत्मपरक निबंध के अंतर्गत रचनाकार का निज से इतनी गहनता स्पष्ट रूपरेखा लेकर उपस्थित रहती है कि वह दूसरे का नहीं बन सकता। निबंध के अंतर्गत लेखक की निजता एक आवश्यक तत्व की तरह होती है और यही निजता निबंध को एक अलग प्रकार की पहचान भी देती है।

निष्कर्ष : अन्य प्रकार

निष्कर्ष रूप में निबंध को चार भागों में बाँटा जा सकता है–1. वर्णनात्मक, 2. भावनात्मक, 3. विचारात्मक तथा 4. विवरणात्मक।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

1. वर्णनात्मक–इस निबंध के अंतर्गत वर्ण्य-विषय के रूप में प्राकृतिक जगत के स्थिर अथवा भौतिक एवं जड़ विषयों को वर्णित किया जाता है।

2. भावनात्मक–इन निबंधों के अंतर्गत हृदय पक्ष की प्रधानता प्रबल रहती है और इसमें रागात्मक तत्व की भी प्रधानता पाई जाती है और ये रसबोधी निबंध भी होते हैं।

3. विचारात्मक–इस प्रकार के निबंधों के अंतर्गत खंडन-मंडन, तर्क-वितर्क, गुण-दोषों के निर्णयों की प्रमुखता पाई जाती है।

4. विवरणात्मक–इस निबंध के अंतर्गत वृत्तांतपरक वर्णन होता है, जिसमें वृत्तांत कथा अथवा घटनाओं का वर्णन किया जाता है। इसमें लेखक निष्पक्ष रूप से विवरण को प्रस्तुत करता है, जिसके अंतर्गत सामाजिक पौराणिक घटना पर यात्रा, जीवनी आदि निबंध इसी श्रेणी में आते हैं।

इसके अतिरिक्त भी अनेक प्रकार की निबंध की कोटियाँ पाई जाती हैं, जो निम्नलिखित हैं–1. सांस्कृतिक, 2. संस्मरणात्मक, 3. हास्य-व्यंग्यपरक, 4. आत्मपरक अथवा वैयक्तिक तथा 5. गवेषणात्मक।

ललित निबंध–समस्त निबंध की उक्त प्रकार की विविधता वाली शैली पर आधारित होते हैं और इसके साथ ही इनकी विषयगत केंद्रीयता भी थोड़ी-थोड़ी अलग होती है, परंतु ये निबंध विषय के ही अंग माने जाते हैं।

शैली

शैली निबंध का प्राण होती है, जिसे निबंध रचना कौशल के रूप में पहचाना जाता है। एक निबंधकार तभी श्रेष्ठ निबंधकार बन सकता है, जब भाषा की शैली पर उसका पूर्ण अधिकार होता है। निबंध की रचना में एक चमत्कार उत्पन्न करने वाला तत्व होता है। निबंध को निबंधकार की निजता व शैली के माध्यम से प्रतिपादित किया जाता है। निबंध को आकर्षण प्रदान करने में शैली के वस्तु प्रस्तुतीकरण और भाषा सहजता की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। निबंध की अभिव्यक्ति को शैली आकर्षक बनाती है। अत: शैली का संबंध प्रत्यक्ष रूप से निबंध की भाषा से होता है। निबंधकार विचारात्मक निबंध को शैली के माध्यम से विश्लेषणात्मक बनाता है। निबंधकार की बौद्धिक क्षमता निबंध लिखने में निरंतर सक्रिय रहती है और तर्क-वितर्क के द्वारा वह अपने विचारों की पुष्टि करता है। निबंधकार को लेकर चिंताएँ निबंध रचना को प्रगाढ़ बनाती हैं। उसकी विवेकशीलता के माध्यम से रचना दक्षिण मुखी बनती है और जीवन व्यवहार की प्रणालियों का निबंध में समावेश करती हैं। रचनाकार के विवेक से ही लोक सेवा के लिए जो भी बौद्धिक उपकरण निबंध में उपलब्ध होते हैं, वे उत्सर्जित रहते हैं।

कुछ प्रकार के निबंधों में निबंधकार को निबंध में अपने विचार को भाव की तरह वर्णित करना पड़ता है। इस प्रकार की प्रक्रिया ललित निबंधों में पाई जाती है। संवेदनात्मक अनुभूति निबंध में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शैली के गुणों में सहज भाषा, स्पष्ट अर्थ और सरलता, प्रसाद जैसे महत्त्वपूर्ण गुण पाए जाते हैं। सामान्य शब्दों में, अधिकतम और न्यूनतम विचार समाज शैली द्वारा प्रस्तुत किए जाते हैं। समाज शैली में भाषा में कसावट और पांडित्य प्रदर्शन का भाव पाया है। भाषा में तत्सम शब्दों की बहुलता इसका महत्त्वपूर्ण लक्षण है। इस प्रकार के गुण जिस शैली में पाए जाते हैं, उसे समास शैली कहते हैं। वहीं, जिसमें उदाहरण की बहुलता पाई जाती है, उसे व्यास शैली कहते हैं। सामान्य रूप से निबंध शैलियों का विभाजन उनकी अभिव्यक्ति विविधता के आधार पर होता है और इसे इस प्रकार से बाँटा जा सकता है–1. भावनात्मक, 2. विचारात्मक, 3. व्यास, 4. उदाहरण तथा 5. प्रवाह आदि।

निबंध का उद्‌भव और विकास

विकास के आधार

आधुनिक हिंदी गद्य विधाओं में निबंध का महत्त्वपूर्ण स्थान है और इसका उद्‌भव भी भारतेन्दु युग से होता है। निबंध का शुरुआती प्रसंग हिंदी पत्रकारिता के विकास के साथ जुड़ा हुआ है। हिंदी निबंध के विकास का सूत्रपात हिंदी पत्रकारिता के साथ एक प्रकार से नदी के उद्‌गम स्थल जैसा प्रतीत होता है। एकदम लघु, परंतु शक्तिशाली प्रवाह के रूप में दिखाई देता है। हिंदी निबंध के प्रारंभिक स्रोतों को पत्र-पत्रिकाओं में इसी प्रकार विस्तृत आंतरिक पत्रकारिता के पृष्ठों में दिखाई देता है। हिंदी गद्य की भूमिका का पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन से विस्तार हुआ है। हिंदी साहित्य के पहले समाचार पत्र 'उदंत मार्तंड' का पहला प्रकाशन 30 मई, 1820 ई. में कोलकाता से हुआ था और इसके उपरांत सन् 1929 में 'बंगदूत' का प्रकाशन भी कोलकाता से ही हुआ था। 1867 ई. में 'कविवचनसुधा' का प्रकाशन हुआ, जो कि हिंदी साहित्य का महत्त्वपूर्ण पत्र था। 1870 के आसपास भारतेन्दु युग की शुरुआत होती है। निबंध लेखन में जॉनसन, एडिशन मैकाले आदि निबंधकार इस काल में सक्रिय थे और शुरुआती निबंधकारों पर इन रचनाकारों का भी विशिष्ट प्रभाव रहा है।

निबंध का प्रारंभ

हिंदी साहित्य में निबंध की शुरुआत एक प्रकार से सामाजिक आवश्यकताओं के कारण हुई थी। सामाजिक सरोकारों में पत्रकारिता की श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति होती है। संपूर्ण निबंधों के लेखन में देशकाल के प्रति चिंता का दृष्टिकोण स्पष्ट झलकता है। यह वह समय था, जब भारतीय जीवन ने अपने संदर्भ में और अपने परिवेश के विषय में सोचना शुरू कर दिया था। देश में स्वतंत्रता संघर्ष की राजनीतिक चहलकदमी शुरू हो चुकी थी। विविध भारतीय भाषाओं में राष्ट्रीय संघर्ष को वर्णित करने वाली संपादकीय टिप्पणियों का प्रकाशन होने लगा था और हिंदी साहित्य में भी इस प्रकार की राजनीतिक हलचलों को अपने साहित्य के परिवेशगत आधार के वातावरण को प्रस्तुत करने में हिंदी साहित्य चीनी बंधुओं का बहुत बड़ा योगदान था। हिंदी निबंध की इस विकास-यात्रा को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है–

1. भारतेन्दु युग 1870 से 1903 तक,
2. द्विवेदी युग 1903 से 1920 तक,
3. शुक्ल युग 1920 से 1940 तक,
4. शुक्लोत्तर युग 1940 से अब तक।

भारतेन्दु युग

भारतेन्दु हरिश्चंद्र बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने अपनी रचनात्मकता से साहित्य विधाओं को समृद्ध किया है तथा उन

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

सभी विधाओं को निर्देशित भी किया है। भारतेन्दु को इस युग की केंद्रीय साहित्य शक्ति के रूप में स्वीकृत किया जाता है। इसी कारण इस युग का नाम भारतेन्दु युग पड़ा। भारतेन्दु महज 7 वर्ष के थे, जब प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम हुआ। भारतीय समाज में उथल-पुथल को उन बाल आँखों ने सहज रूप से झाँक लिया था। उन्होंने मध्ययुगीन प्रवंचनाओं को छोड़कर एक नए भारत के स्वप्न को सींचने की दिशा में कदम बढ़ाया। सन् 1857 ई. में देश की आजादी के लिए स्वतंत्रता संग्राम की पहल तो अवश्य हुई, परंतु अंग्रेजों ने उस क्रांति का बहुबल के कारण दमन कर दिया। ईस्ट इंडिया कंपनी से भारत को मुक्ति तो मिली, लेकिन महारानी विक्टोरिया का गुणगान भी उस समय होने लगा। निबंध रचनात्मकता की दृष्टि से भारतेन्दु युग को महत्त्वपूर्ण काल कहा जाता है। हिंदी साहित्य में निबंध का शुरुआती स्वरूप राष्ट्रीय एवं सामाजिक चिंताओं से निर्मित होता है। इस युग के रचनाकारों के निबंधों में हास्य-व्यंग्य का पुट देखने को मिलता है, वह भी एक प्रकार से केवल थोथा हास्य-व्यंय नहीं कहा जा सकता था, उसके अंदर भी अंग्रेजों का सामाजिक एवं उच्चताबोध तथा अपनी हीन वृत्ति पर आधारित आघात छिपा हुआ है।

भारतेन्दु युग में अधिकांश निबंधों का प्रकाशन पत्र-पत्रिकाओं में हुआ तथा इन निबंधों में विषय विविधता पाई जाती है। इन निबंधों के विषयों में समाज-सुधार, पुनर्संस्कार, धार्मिक, राजनीतिक चेतना का उदय, राष्ट्र गरिमा की स्थापना, आर्थिक दुर्दशा का बखान और अतीत गौरव का प्रस्तुतीकरण आदि कई विषयों का इस युग के निबंधों में समावेश हुआ है। इस युग के निबंधों में आगामी कई सामाजिक रूपरेखाएँ उद्घाटित होने लगी थीं। इस युग के निबंधकारों में बालकृष्ण भट्ट एवं प्रताप नारायण मिश्र निबंधकार महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं, जिन्हें आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी का एडिशन एवं स्टील कहा है। दूसरे निबंध रचनाकारों में बालमुकुंद गुप्त, बद्रीनारायण प्रेमघन, राधाचरण गोस्वामी और काशीनाथ खत्री आदि प्रमुख रहे हैं। निबंधकारों की मस्ती एवं बेलोसपन का समावेश देखने को मिलता है और यह अपने पाठकों से आत्मीयतापूर्ण वार्तालाप करते हैं। उन्हें हँसाते हैं और गुदगुदाते हैं तथा उन्हें उत्तेजित करने का प्रयास करते हैं।

डॉ. रामविलास शर्मा ने भारतेन्दु युग की विशेषताओं पर विचार-विमर्श करते हुए यह स्पष्ट किया है कि जितनी सफलता भारतीयों के रचनाकारों को निबंध रचना करने में मिली है। उतनी कविता और नाटक में नहीं मिल पाई है। इसका महत्त्वपूर्ण कारण था पत्रिकाओं में लगातार लिखते रहने से उनकी शैली में खूब निखार आ चुका था, क्योंकि उस युग के लेखक तटस्थ रहकर अपनी बात को पाठक तक नहीं पहुँचा सकते थे। वह अपने पाठकों के साथ आत्मीयतापूर्ण संबंध स्थापित करना चाहते थे। इस युग के निबंधों में सामाजिक चिंताओं की अभिव्यक्ति हुई है, तो इससे स्पष्ट होता है कि इस युग के निबंधकारों के समक्ष उनका महत्त्वपूर्ण लक्ष्य सामाजिक सरोकार ही रहा था, क्योंकि वह निबंध को सामाजिक बदलाव की भूमिका से संबंधित करना चाहते थे।

द्विवेदी युग

द्विवेदी युग के प्रवर्तक आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी माने जाते हैं, जो कि केंद्रीय व्यक्तित्व की तरह प्रतिष्ठित व्यक्तित्व थे और उन्हीं की रचनात्मकता के आधार पर उन्हीं के नाम पर द्विवेदी युग का नामकरण हुआ है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती पत्रिका का संपादन किया। इस युग में इस पत्रिका ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक कालखंड को द्विवेदी युग के नाम से जाना जाता है। द्विवेदी के व्यक्तित्व की बहुमुखी प्रतिभा का परिचय इस युग में हिंदी साहित्य को हासिल हुआ। राजनीतिक क्षेत्र में राष्ट्रीय कांग्रेस की पताका देश में मजबूत होने लगी थी और उसकी बागडोर लोकमान्य तिलक के हाथों में आ गई थी। उनका नारा था 'स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' का उद्घोष उन्होंने किया और पूर्ण स्वराज की माँग को दृढ़ता के साथ उठाया। उस समय की पत्र-पत्रिकाओं में इस तरह के लेख, निबंध, वृत्तांत और टिप्पणियाँ प्रकाशित होने लगी थीं। इस प्रकार की समूची पृष्ठभूमि ने द्विवेदी युग को पल्लवित, पुष्पित करने का काम किया। इस युग में अनुवाद के कार्य को भी व्यापक स्तर पर महत्त्व दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप साहित्य का अनुवाद हिंदी में होने लगा, जिसके कारण हिंदी साहित्य की निबंध शैली में और उसके स्वरूप में महत्त्वपूर्ण बदलाव हुए।

द्विवेदी युग के निबंधों में बौद्धिक गंभीरता की बहुलता एवं हास्य विनोद का पुट देखने को मिलता है। इस युग के ज्यादातर निबंधों की समाचार-पत्रों, साप्ताहिकों एवं मासिकों की जरूरतों की पूर्ति के लिए रचना हुई, जिसके कारण इन निबंधों में समस्यामूलक, संकेतात्मक एवं सूचनात्मक का समावेश स्वतः ही हो गया है। द्विवेदी युग के समकालीन निबंधकारों में पंडित माधव प्रसाद मिश्र, पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी, बाबू गोपाल राय, पंडित गोविंद नारायण मिश्र, बाबू बृजनंदन सहाय, सरदार पूर्ण सिंह और गुलाब राय आदि का नाम विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण था। निबंधकारों में विशेष रूप से चंद्रधर शर्मा गुलेरी, पंडित माधव प्रसाद मिश्र एवं अध्यापक पूर्ण सिंह ने अपनी बहुमुखी प्रतिभा से हिंदी निबंधकारों को न केवल विकसित किया, बल्कि उसे नवीन संभावनाओं से ओत-प्रोत भी कर दिया। इस युग के निबंधों का विषय राष्ट्रीय जागृति, सामाजिक एकता, विश्व प्रेम, भारत एवं दूसरे देशों से संपर्क, जातीय स्मृतियों का संवर्धन, सांस्कृतिक पुनरुत्थान एवं भाषा के परिष्कार का निर्देशन हुआ था, इससे निबंध की शैलियों में निरंतर विकास होता है।

शुक्ल युग

निबंध के क्षेत्र में आचार्य रामचंद्र शुक्ल का आगमन एक महत्त्वपूर्ण घटना मानी जाती थी। उनके रचनात्मक व्यक्तित्व ने हिंदी निबंध को केवल विकसित ही नहीं किया, बल्कि उसे नई दिशाएँ भी प्रदान की हैं। आचार्य गुलाब राय का मत है कि आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबंध क्षेत्र में आने से निबंध साहित्य को एक नया प्राण मिला है। निबंध के क्षेत्र में द्विवेदी युग में व्यापक एवं परिमार्जन तो विस्तृत रूप में प्राप्त हुआ, लेकिन उस युग में उतना विश्लेषण करने में और गहराई तक जाने की प्रवृत्ति पैदा नहीं हो सकी और आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने निबंध को ये समस्त विशेषताएँ प्रदान की हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल का युग राष्ट्रीय जागरण के सामूहिक संकल्प का युग था और इस युग में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का राजनीतिक क्षेत्र में आगमन हो चुका

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com